Seventeenth Loksabha

an>

Title: Need to provide Mangarh-Dham as a National Memorial status in Banswada Parliamentary Constituency.

श्री कनकमल कटारा (बांसवाड़ा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक ऐसी घटना के बारे में निवेदन करना चाहता हूँ, जो जलियांवाला बाग से भी बड़ी है । यह कांड मेरे निर्वाचन क्षेत्र बांसवाड़ा-डूंगरपुर के तहत मानगढ़ धाम में हुआ था । मैं आपके माध्यम से मानगढ़ धाम को राष्ट्रीय स्मारक का दर्जा दिलाने के लिए सरकार से माँग करना चाहता हूँ । इस धाम का महत्त्व है । आप मुझे दो मिनट बोलने की स्वीकृति प्रदान करें ।

मानगढ़ धाम जो बांसवाड़ा का जलियांवाला बाग है, में देशभक्ति और गुरु भक्ति दिखती है । मानगढ़ धाम का कांड, जलियांवाला बाग से भी बड़ा कांड था । उससे पहले भी कुछ कांड हुए हैं । उदयपुर, राजस्थान का दक्षिणी जनजातीय बहुल क्षेत्र आंचल-बांसवाड़ा-डूंगरपुर आज़ादी के इतिहास की एक ऐसी लोमहर्षक घटना का साक्षी है, जहाँ महान् संत गोविन्द गुरु के नेतृत्व में डेढ़ हजार आदिवासी भक्तों ने देश की आजादी के लिए अंग्रेजों से संघर्ष करके 17 नवम्बर, 1913, मार्ग शीर्ष पूर्णिमा के दिन अपना बलिदान दिया था । यह देश का एक ऐसा स्मारक है, जो गोविन्द गुरु और देशभक्ति का साथ दर्शाता है । मानगढ़ धाम की स्थिति राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात की सीमा से मिलती है । मानगढ़ धाम में पहाड़ ही नहीं, राजस्थान के डूंगरपुर-बांसवाड़ा सहित गुजरात-मध्य प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में, जो गुरु-शिष्यों के द्वारा स्थापित हुई है, उस बलिदान की साक्षी हैं ।

गुजरात के झालोर तहसील की नटरापुंधेला ढुणी, राजस्थान के डूंगरपुर में,....

माननीय अध्यक्ष: माननीय कनकमल जी, आप अपनी माँग रखें । आप क्या चाहते हैं, यह बताएँ ।

श्री कनकमल कटारा : मैं चाहता हूँ कि जिस तरह से इन आदिवासियों ने देश की स्वतंत्रता के लिए गोविन्द गुरु जी के साथ संघर्ष करते हुए, लोक गीत के माध्यम से इन लोगों ने जिस तरह से अंग्रेजों से संघर्ष किया है, वह स्थान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । वहाँ माननीय प्रधान मंत्री जी दो बार पधार चुके हैं । वहाँ राजस्थान सरकार ने भी नौ करोड़ रुपये खर्च करके बहुत अच्छे काम किये हैं और गुजरात सरकार ने भी बहुत अच्छे काम किये हैं । उस स्थान को राष्ट्रीय दर्जा प्रदान किया जाए ।

माननीय अध्यक्ष: बहुत अच्छे काम हुए हैं, तो आपकी क्या माँग है, यह बताएँ ।

श्री कनकमल कटारा : मैं दो पंक्तियाँ निवेदन करना चाहता हूँ । वे लोग जिस तरह से लोक गीत के माध्यम से अंग्रेजों से संघर्ष करते थे, उनको ललकारते थे, मैं वे पंक्तियाँ निवेदन करना चाहता हूँ- "झालोद में म्हारी उंडी है, दाहोद में म्हारी थाड़ी है भूरेटिया, नइ मानो रे नइ मानो ।"

इस तरह से, लोक गीत के माध्यम से वे अंग्रेजों से संघर्ष करते थे । … (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: रवि किशन जी, आप भी एक गीत सुना दो ।